समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 23 September 2026

नाशिक मे गंणेशोत्सव की धूम : घर-घर मे बंप्पा का स्वागत और शहर की सजावट

Publisher

Published on 28 Aug 2025

नाशिक में गणेशोत्सव का त्योहार इस वर्ष भी पूरे उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। यह पर्व न केवल धार्मिक श्रद्धा का प्रतीक है, बल्कि शहरवासियों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक जुड़ाव का भी एक महत्वपूर्ण अवसर है। घर-घर में भगवान गणेश की प्रतिमाओं की स्थापना की गई है और विभिन्न पद्धतियों से सजावट की गई है। इस वर्ष त्योहार को पर्यावरण के अनुकूल तरीके से मनाने का विशेष जोर दिया गया है।

घर-घर मे बंप्पा का आगमन

नाशिक के प्रत्येक घर में गणेश प्रतिमा की स्थापना के लिए विशेष तैयारियाँ की गई हैं। बप्पा के स्वागत के लिए पारंपरिक रीतियों का पालन करते हुए, घरों में साफ-सफाई और सजावट की गई है। कई घरों में फूलों की माला, रंगोली और दीपों से बप्पा का स्वागत किया जा रहा है।

बच्चों और युवाओं ने भी उत्साह के साथ इस पर्व में भाग लिया है। वे बप्पा की प्रतिमा सजाने, फूलों और मोमबत्तियों से अलंकरण करने और पारंपरिक गीतों और भजनों के माध्यम से स्वागत करने में जुटे हैं।

मिरवणूक और ढोल-ताशों की गूंज

नाशिक में गणेश उत्सव के दौरान विशेष मिरवणूकें निकाली जाती हैं। इन मिरवणूक में ढोल-ताशों की थाप, नगाड़ों की गूंज और पारंपरिक वाद्य यंत्रों की मधुर ध्वनि से पूरा शहर गुंजायमान होता है। लोग अपने-अपने घरों और मोहल्लों से निकलकर बप्पा के स्वागत में शामिल होते हैं।

इस वर्ष नाशिक के प्रमुख बाजारों और चौक-चौराहों में भी विशेष मिरवणूकें आयोजित की गई हैं। लोग पारंपरिक पोशाकों में सजे हुए हैं और बच्चों के साथ झांकी और नृत्य प्रस्तुत कर रहे हैं। यह दृश्य पर्यटकों और शहरवासियों दोनों के लिए अत्यंत आकर्षक साबित हो रहा है।

पारंपरिक मोदक और भोग की तैयारी

गणेशोत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा है मोदक और भोग की तैयारी। नाशिक के घरों में पारंपरिक मोदक बनाने की खुशबू चारों ओर फैली हुई है। परिवार के सदस्य मिलकर मोदक, लड्डू और अन्य प्रसाद तैयार कर रहे हैं।

कई घरों में बप्पा को लड्डू, मोदक और खीर का भोग लगाया जाता है। यह भोग न केवल धार्मिक अनुष्ठान का हिस्सा है, बल्कि पारिवारिक मेलजोल और बच्चों के लिए भी आनंद का कारण बनता है।

पर्यावरण के अनुकूल सजावट और पहल

इस वर्ष नाशिक में पर्यावरण के अनुकूल सजावट पर विशेष ध्यान दिया गया है। कई घरों और समाजों ने प्लास्टिक और गैर-पर्यावरणीय सामग्री के बजाय कागज, मिट्टी और जैविक सामग्री का प्रयोग किया है।

शहर के विभिन्न समाजों ने "ग्रीन गणेशोत्सव" अभियान चलाया है, जिसमें प्रतिमाओं की स्थापना और विसर्जन के समय पर्यावरण सुरक्षा पर जोर दिया गया है। इससे जल प्रदूषण और प्लास्टिक कचरे की समस्या कम करने में मदद मिल रही है।

सामूहिक उत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रम

नाशिक में गणेशोत्सव के दौरान सामूहिक उत्सवों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है। मोहल्लों और समितियों द्वारा आयोजित इन कार्यक्रमों में संगीत, नृत्य, नाट्य और झांकियां प्रस्तुत की जा रही हैं।

युवाओं और बच्चों के समूह पारंपरिक गीतों और भजनों के माध्यम से बप्पा का स्वागत कर रहे हैं। इस दौरान, शहर के लोग एक-दूसरे से मिलते हैं, उत्सव में भाग लेते हैं और सामाजिक सौहार्द बनाए रखते हैं।

सुरक्षा और व्यवस्थापन

इस वर्ष नाशिक प्रशासन ने गणेशोत्सव के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को कड़ा किया है। प्रमुख मंडपों और मिरवणूक मार्गों पर पुलिस और नागरिक सुरक्षा कर्मियों की तैनाती की गई है। भीड़ नियंत्रण, यातायात प्रबंधन और स्वास्थ्य सुविधाओं की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

इसके अलावा, कोरोना वायरस और अन्य स्वास्थ्य संबंधित सावधानियों का भी विशेष ध्यान रखा जा रहा है। मास्क, सैनिटाइजेशन और भीड़ प्रबंधन को लेकर लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

व्यापार और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

गणेशोत्सव न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव है, बल्कि नाशिक की स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस दौरान बाजारों में भीड़ बढ़ जाती है और व्यापारियों की बिक्री में इजाफा होता है।

फूलों, मिठाई, सजावटी सामग्री और गणेश प्रतिमाओं की मांग बढ़ जाती है। इससे छोटे और मध्यम व्यवसायों को लाभ मिलता है और रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होते हैं।

पर्यटकों और आगंतुकों का आकर्षण

नाशिक में गणेशोत्सव के दौरान पर्यटक भी शहर का रुख करते हैं। मिरवणूक, सजावट और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देखने के लिए लोग नाशिक आते हैं। इस कारण शहर की पर्यटन गतिविधियों में वृद्धि होती है।

पर्यटक स्थानीय भोजन, पारंपरिक व्यंजन और बाजारों की खरीदारी का भी आनंद लेते हैं। यह न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभव देता है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ करता है।

निष्कर्ष

नाशिक में गणेशोत्सव न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जुड़ाव का भी माध्यम है। घर-घर में बप्पा का स्वागत, मिरवणूक, ढोल-ताशों की गूंज, पारंपरिक मोदक और पर्यावरण के अनुकूल सजावट से यह त्योहार हर साल नाशिकवासियों के लिए आनंद और उत्साह लेकर आता है।

ऐसी ही देश और दुनिया की बड़ी खबरों के लिए फॉलो करें: www.samacharwani.com

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.